RNI NO. : MPHIN33094

चहकती चेतना

बाल युवा त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष- 15वां अंक 55

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

बोलते चित्र

EDUCATION

Here son, I saved all this money for your future

SURAJ

This is the saddest reality of,
Today's Generation

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

जून - अगस्त 2020

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग शास्त्री, जबलपुर

डिजाइन/ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
डॉ. उज्जवला शहा-पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
श्री अजित प्रसाद जी जैन, दिल्ली,
श्री मणिभाई कारिया, ग्रांट रोड, मुंबई
कु. अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन बहरीन

परम संरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज उ.प्र.

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर, श्री सुनील भाई जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
श्री निमित्त शाह, कनाडा

1	सूची	1
2	हमारे तीर्थक्षेत्र – विदिशा नगरी	2
3	संपादकीय	3–4
4	भारतीय संस्कृति में रात्रिभोज	5–6
5	पौराणिक कथा / हमारे मुनिराज	7
6	ऐतिहासिक प्रसंग – पहेलिया	8
7	प्रेरक प्रसंग – प्रतिमा का महत्व	9
8	प्रेरक प्रसंग – सीमा	10
9	क्या दूध अभक्ष्य है ..	11–12
10	प्यारी कवितायें	13
11	बाजार का भोजन न बाबा न	14
12	हमारा गौरवशाली इतिहास–जगन्नाथपुरी	15
13	भोपाल की प्रसिद्ध जामा मस्जिद	16
14	समय–समय पर जान लो	17
15	भारत की वीर महिलायें	18–19
16	चार बातें	20–21
17	क्या दिया बॉलीवुड और टीवी ने...	22–23
18	क्या आप भी पशु हत्या में भागीदार...	24–25
19	राजस्थान के राजवंश में जैनत्व	26–27
20	समाचार	28
21	सुनो कहानी – दंड नाम के मुनि..	29
22	जन्म दिवस	30
23	करम की गति न्यारी न्यारी	31–32

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
"चहकती चेतना"
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 7000104951
chehaktichetna@yahoo.com

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

सदस्यता शुल्क - 500/- रु. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रु. (दस वर्ष हेतु)

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
www.vitragvani.com

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप "चहकती चेतना" के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

हमारे तीर्थ क्षेत्र -

विदिशा नगरी
का ऐतिहासिक महत्व

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के मात्र 40 किमी की दूरी पर स्थित विदिशा का ऐतिहासिक महत्व है। इस नगरी का उल्लेख अनेक प्राचीन ग्रन्थों में गौरव के साथ उपलब्ध है। आइये जानते हैं इसका ऐतिहासिक महत्व -

- यशस्वी प्रतिभाशाली नगरी विदिशा में भगवान शीतलनाथ के गर्भ, जन्म और तप ये तीन कल्याणक हुये।
- अयोध्या के राजा राम वनवास के समय विदिशा पधारे थे।
- भगवान नेमिनाथ का समवशरण यहाँ समीप ही सांची में आया था।
- तीस जैनाचार्य पट्टाधीश यहाँ हुये। मुस्लिम शासकों ने इन जैन आचार्यों के सम्पूर्ण साहित्य में आग लगाकर उसे नष्ट करवा दिया था।
- इसी विदिशा नगरी में सर्वप्रथम सम्राट चन्द्रगुप्त को आचार्य भद्रबाहु ने उपदेश दिया था और इससे प्रभावित होकर चन्द्रगुप्त ने जैन धर्म स्वीकार किया।
- सम्राट अशोक ने विदिशा के नगर सेठ की पुत्री से विवाह किया था और इसकी स्मृति में सम्राट अशोक ने भगवान नेमिनाथ के समवशरण की रचना उत्कीर्ण करवाई थी।
- आचार्य लोह मुनि ने अन्य धर्म के गुरुओं ने शास्त्रार्थ किया और विजय प्राप्त की थी।
- आचार्य समन्तभद्र ने वाममार्गियों को शास्त्रार्थ में हराकर जिनधर्म की प्रभावना की थी। इसके प्रमाण स्वरूप विजय मंदिर के शिलालेख में इस घटना का उल्लेख है।
- महान आचार्य अकलंकदेव ने विदिशा और आसपास के क्षेत्रों में विहार कर बौद्धों को परास्त किया था।
- आचार्य पुष्पदंत और भूतबलि विरचित षट्खण्डागम की टीका ग्रन्थ धवल, जयधवल, महाधवल का सर्वप्रथम प्रकाशन विदिशा के सेठ सिताबरायजी के विशेष सहयोग से हुआ था।
- विदिशा नगर में किला अन्दर में स्थित मुख्य श्री शीतलनाथ दिगम्बर जिनमंदिर अपनी विशेष रचना और सौन्दर्य के लिये विख्यात है।
- विदिशा के उपनगर भद्दिलपुर में स्थित अतिशय क्षेत्र अति रमणीय और शांतिप्रदायक स्थान है।

संपादकीय

कोरोना महामारी
और उसमें छिपा गहरा संदेश

सम्पूर्ण विश्व आज कोरोना की भयंकर आपदा से जूझ रहा है। चीन के एक शहर वुहान से शुरु हुई यह कोरोना वायरस की आपदा पूरे विश्व के महाप्रलय का संकेत लेकर आई है। कई मीडिया रिपोर्ट के अनुसार अकेले चीन में ही लगभग 1 करोड़ लोगों की मृत्यु हो गई है। यद्यपि चीन की ओर से इस सम्बन्ध में कोई आधिकारिक बयान नहीं आया परन्तु सेटेलाईट विवरण के अनुसार अकेले चीन में ही 84 लाख मोबाईल बन्द हो गये हैं जो एक-डेढ़ माह पहले तक एक्टिव थे इसका सीधासा अर्थ है इन मोबाइल का प्रयोग करने वाले मृत्यु को प्राप्त हुये हैं। चीन में कोरोना की बीमारी के शिकार कई लोगों को गोली मारकर हत्या कर दी गई है, इस बीमारी के संदिग्ध परिवारों के घर के वेल्डिंग करके बन्द कर दिये गये जिससे वे भूख-प्यास से ही मर गये। आप कल्पना करें कि वह दृश्य कैसा होगा कि माता-पिता के सामने उनके बच्चे भोजन पानी मांगते-मांगते रोते हुये मर रहे होंगे।

विश्व के विकसित कहे जाने वाले अमेरिका, इटली जैसे विश्व सर्वोत्तम मेडीकल सुविधायें देने वाले इन देशों में भी अनगिनत मौतें हो रहीं हैं। सब असहाय नजर आ रहे हैं। भारत में 22 मार्च को जनता कर्फ्यू की घोषणा की गई तो उसके पूर्व ही पूरे देश के लोगों में एक भय नजर आने लगा, किराना दुकानों में लम्बी लाईन लग गई, सेनेटाइजर, हेण्डवॉश, मास्क दुकानों से समाप्त हो गये, चारों तरफ एक ही चर्चा कोरोना-कोरोना, लोग घरों कैद हो गये, ज्यों-ज्यों इस बीमारी के शिकार लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है सबको लग रहा है कि काल बस आने ही वाला है। इन सब परिस्थितियों के बीच इस महामारी ने एक सशक्त संदेश दे दिया कि **मणि मंत्र तंत्र बहु होइ, मरते न बचावे कोई।** हमारे तीर्थंकर, आचार्य, दिगम्बर वीतरागी संत, विद्वान सदा से कहते रहे हैं कि **सम्राट महाबल सेनानी उस क्षण को टाल सकेगा। अशरण मृत काया में हर्षित निज जीवन डाल सकेगा।** प्रत्येक जीव को अपने परिणामों के फल भोगना पड़ता है यह प्रकृति का अकाट्य सत्य है। चीन के कुछ वीडियो में क्रूरता की पराकाष्ठा दिख रही है जिन वीडियो में जिन्दा कुत्तों को जलाया जा रहा है, जीवित मुर्गियों को खौलते पानी में उबाला जा रहा है, जिन्दा चूहे, कॉकरोच, इल्ली आदि जीवों को एसिड में डुबोकर उन्हें बहुत मजे से खाया जा रहा है तो इन भयंकर क्रूर परिणामों का फल भी भोगना ही पड़ेगा और हमने भी अभी नहीं तो पूर्व पर्याय में कभी न कभी किन्हीं जीवों को डराया होगा जो आज इस डर का सामना कर पड़ रहा है।

सच कहा जाये तो जिनागम में वर्णन आता है कि छठे काल के अंत होने के 49 दिन पूर्व प्रलय के समय पर्वत-वृक्ष-भूमि आदि को नष्ट करती हुई संवर्तक

नाम की हवा चलेगी और सभी जीव मृत्यु को प्राप्त होते जायेंगे। क्या यह उसका सेम्पल नहीं है... यदि हमने अपने दिगम्बर निस्पृही आचार्यों की वाणी का मन से पठन किया है तो इस संकट की घड़ी में भय, चिन्ता, ड्रिप्रेशन नहीं बल्कि सावधानी और सुरक्षा के उपायों के साथ हमारा आत्मबल बढ़ना चाहिये, केवली भगवन्तों पर श्रद्धा और दृढ़ होना चाहिये। जैन दर्शन के अमिट सिद्धान्त हमें हर परिस्थिति में पुरुषार्थपूर्वक लड़ना और जीना सिखाते हैं। जरा ये भी विचार करें - बार-बार इस महामारी की चिन्ता और चर्चा से आर्त-रौद्र परिणामों से पाप बन्ध ही हो रहा है जब इस बीमारी के छोटे रूप से देह और संयोगों के छूटने की चिन्ता से हमारा मन व्याकुल हो रहा है तो हम मृत्यु का सामना कैसे करेंगे? यह समय अपने तत्व अभ्यास की गहराई को नापने का है, यह समय जिनकथित सूत्रों के विचार का है और इसमें भी कोई आश्चर्य नहीं कि जैसे ही इस महामारी का प्रकोप कम या समाप्त हो जायेगा हम फिर अपनी उसी भ्रम की दुनिया लौट जायेंगे जहाँ हमें आनन्द और भोग नजर आते हैं और हम अमरत्व की मिथ्या अनुभूति करने लगते हैं और आश्चर्य तो इस मौत के तांडव के बीच हमारे समाज में कोरोना का मजाक बनाने वाले, उस पर मीम्स बनाने वाले, जन्म दिन की शुभकामनायें देने वाले, टिकटॉक पर अपनी बेशर्मी दिखाने वाले भी मौजूद हैं। यह समय सकल विश्व में शांति की कामना करने का है। हम शांति पाठ में स्मरण करते हैं -

होवै सारी प्रजा को सुख बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवै वर्षा समय पर तिल भर न रहे व्याधियों का अंदेशा।।
होवै चोरी न जारी, सुसमय वर्ते, हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारैं, जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी।।

यह समय देश के साथ खड़े होने का है, इस बीमारी का शिकार लोगों को सांत्वना और सहयोग देने का है, हमारे अधीनस्थ कर्मचारियों और गरीब लोगों को संबल और वात्सल्य देने का है न कि प्राप्त अनुकूल संयोगों के बल पर बेशर्मी का अट्टहास लगाने का। ध्यान रहे विश्व का प्रत्येक जीव कर्म के कैमरे की निगरानी में है, हमारे परिणामों का फल कुदरत जरूर देगी, सोचना यह है कि हम कितने जागरुक हैं और स्वयं के प्रति कितने सावधान। **भयभीत कभी न रहें और सावधान सदा रहें।**
अंत में इसी कामना के साथ

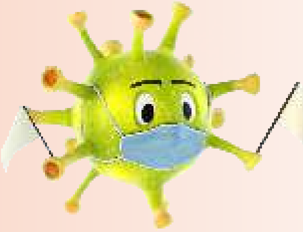

सुखी रहें सब जीव जगत के कोई कभी न घबरावे।
बैर पाप अभिमान छोड़ जग नित्य नये मंगल गावे।।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावें।
ज्ञान-चरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्म सब फल पावें।।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

भारतीय संस्कृति में रात्रिभोजन निषेध

श्वभ्रद्वाराणि चत्वारि प्रथमं रात्रिभोजनं।
परस्त्रीगमनं चैव संधानानंकायकम् ।। -

मनुष्यों को नरक में ले जाने के चार रास्ते हैं, जिनमें सबसे पहला रात्रि के समय भोजन करना, दूसरा परस्त्री सेवन, तीसरा अचार-मुरब्बा-मांस-शराब आदि का सेवन और चौथा जमीकन्द (आलू, मूली, गाजर, प्याज, लहसुन आदि) का सेवन करना।

-महाभारत शान्ति पर्व

अस्त गते दिवानाथे, आपो रुधिरमुच्यते।
अन्नं मांस समं प्रोक्तं, मार्कण्डेय-महर्षिणा।।१४।।

मार्कण्डेय ऋषि ने बतलाया है कि सूर्य अस्त हो जाने पर पानी रुधिर पीने के समान और अन्न खाना मांस खाने के समान है। **- मार्कण्डेयपुराण**

मृते स्वजनमात्रेपि सूतक जायते किल।
अस्तं गते दिवानाथे भोजन क्रियते कथम् ।।

जब कभी अपना कुटुम्बी या पड़ोसी मर जाता है तो सूतक लग जाता है और उस समय भोजन नहीं किया जाता तो सूर्य अस्त हो जाने पर भोजन कैसे किया जा सकता है ?

एकभुक्ताशनन्नित्यमग्निहोत्रफलं भवेत् ।
अनस्तभोजिनो नित्यं तीर्थयात्राफलं भजेत् ।।

जो दिन में एक बार भोजन करना है उसे अग्नि होम के फल समान फल मिलता है और सदैव सूर्यास्त के पहले भोजन करने वाला तीर्थयात्राओं से होने वाले फल को घर में ही प्राप्त कर लेता है। **-स्कन्दपुराण**

रात्रौ श्राद्धं न कुर्वीत राक्षसी कीर्तिता हि सा।
संध्ययोरुभयोश्चैव सूर्यश्चैवाभि रोचते।।

रात्रि के समय श्राद्ध न करें क्योंकि राक्षसी कृत्य ही रात को होते हैं, दैवी और मानवी कृत्य नहीं।

पूर्वान्हे भुंज्यते देवैर्मध्यान्हे ऋषिभिस्तथा।
अपरान्हे च पितृभिःसायन्हे दैत्य दानवैः।।२४।।

स्वर्गवासी देव प्रातः भोजन करते हैं, ऋषिजन मध्यान्ह (दोपहर) में भोजन करते हैं, पितृजन तीसरे पहर में भोजन करते हैं, परन्तु राक्षस व दैत्यजन रात के समय भोजन करते हैं। जो श्रेष्ठ बुद्धिमान मनुष्य सदैव रात्रि के समय आहार नहीं करते उनको एक महीने में 15 दिन के उपवास का फल मिलता है।

भाग्यहीन, आदर रहित नीच, कुलहिं उपजाहिं।
दुःख अनेक लहै सी जो निशि भोजन खाहिं।।
जो कदाचि मर मनुष है, विकल अंक बिनु रूप।
अलप आयु दुर्भग अकुल, विधि रोग दुख कूप।।

रात्रि के समय भोजन करने वाले मनुष्य भाग्य हीन, अपयश लेने वाले, मरकर पाप के फल में उल्लू, कौआ, बिलाव, गिद्ध आदि निकृष्ट पशु योनि में जन्म लेते हैं।

अन्नं पानं स्वाद्यं लेहं, नाश्नाति यो विभावर्याम् ।
स च रात्रि भुक्तिः विरतः सत्वेष्वनुकम्पमानमनाः।।

उत्तम श्रावक रात्रि में किसी भी प्रकार के खाद्य, स्वाद्य, पेय, लेह आदि पदार्थों का सेवन न स्वयं सेवन करता है और न ही दूसरों को कराता है। **- श्रावक धर्म प्रकाश**

यो मित्रेस्तंगते रत्ते विदध्याद्भोजनंजन।
तद् द्रोही स भंत्यापः शवस्यापरि चाशन् ।।

जो पुरुष सूर्य के अस्त हो जाने पर भोजन करते हैं, उन पुरुषों को सूर्य द्रोही समझना चाहिये। **- धर्म संग्रह श्रावकाचार**

जो मद्य, मांस का सेवन करते हैं, रात्रि के समय भोजन करते हैं तथा जमीकन्द का सेवन करते हैं उनके तीर्थयात्रा करना, जप-तप करना, एकादशी करना, व्रत रखना आदि कार्य सब व्यर्थ है। **- ऋषीश्वर भारत वैदिक दर्शन**

एक व्यक्ति की इष्टतम दैनिक दिनचर्या के लिये रात में खाने से बचना चाहिये क्योंकि उस समय जठराग्नि जो खाना पचाने का काम करती है, उस समय बहुत कमजोर होती है। **- चरक संहिता और अष्टांग संग्रह**

सहयोग प्राप्त

5000/- छिन्दवाड़ा निवासी और धर्मप्रेमी श्री अजित कुमारजी जैन के 5 फरवरी 2020 को स्वर्गवास होने पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमति पुष्पलता जैन द्वारा प्राप्त।

1100/- जबलपुर निवासी ब्र. डॉ. मनोजजी, श्री मनीषजी, श्री मुकेशजी जैन के पिता चौधरी राजकुमारजी जैन का (सेवा निवृत-मध्यप्रदेश विद्युत निगम) दिनांक 1 जनवरी 2020 को 74 वर्ष की आयु में पंचपरमेष्ठी के स्मरणपूर्वक शांत परिणामों से देहावसान होने पर उनकी स्मृति में प्राप्त।

चहकती चेतना परिवार की ओर से दिवंगत आत्माओं के शीघ्र भव विराम की कामना।

अभयघोष मुनि की कथा

काकन्दीपुर में राजा अभयघोष राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम अभयमती था। एक दिन राजा अभयघोष घूमने जा रहे थे तो रास्ते में उन्हें एक मल्लाह मिला जो एक जीवित कछुये के चारों पैर बांधकर लकड़ी पर लटकाकर लिये जा रहा था। राजा ने तलवार से उसके चारों पैर काट दिये। कछुआ तड़प- तड़पकर मर गया और मरकर राजा अभयघोष का ही चण्डवेग नाम का पुत्र हुआ।

एक दिन अभयघोष को चन्द्रग्रहण देखकर संसार से वैराग्य हो गया और उसने अपने पुत्र का राज्य सौंपकर दिगम्बर जिनदीक्षा स्वीकार कर ली। कई वर्षों तक अपने गुरू के पास शिक्षा ग्रहण करने के बाद गुरू आज्ञा से दूसरे नगरों में विहार करने लगे। कई वर्षों बाद वे वापस काकन्दीपुर आये और नगर के पास के जंगल में खड़े होकर तप करने लगे। इसी समय उनका पुत्र चण्डवेग जो पूर्व भव में कछुआ था, वह वहाँ से निकला। मुनिराज को वह पहचान नहीं पाया और उन्हें देखकर उसका पूर्वभव का बैर जाग्रत हो गया। उसने तीव्रकषायवश उन मुनिराज के हाथ-पैर काट दिये। इस भयंकर उपसर्ग आने पर भी अभयघोष पर्वत समान अचल खड़े रहे और आत्मा में लीन होकर मुक्ति की प्राप्ति की।

- आचार्य अमितगति प्रणीत मरणकण्डिका ग्रन्थ से साभार

हमारे मुनिराज -

नाव में ही केवलज्ञान

पणीश्वर नामक नगर में राजा प्रजापाल राज्य करते थे।वहाँ एक सागरदत्त सेठ अपनी पणिका नाम की स्त्री के साथ आनन्द से रहते थे। उनका एक पणिक नाम का पुत्र था। पणिक बहुत सरल परिणामों का युवक था। एक दिन पणिक भगवान महावीर के समवशरण में गया। समवशरण में विराजमान भगवान महावीर की अत्यंत शांत मुद्रा देखकर पणिक का रोम-रोम पुलकित हो गया। उसने भगवान की पूजन-स्तुति की और भगवान का उपदेश सुना फिर अपनी आयु के बारे प्रश्न किया तो उसे भगवान की दिव्यध्वनि में ज्ञात हुआ कि उसकी आयु बहुत कम ही शेष रह गई है। पणिक को वहीं वैराग्य हो गया और उसने दिगम्बर जिन दीक्षा ले ली और पणिक अनेक देशों में विहार करते हुये एक बार गंगा नदी पार करने के लिये एक नाव पर बैठे। मल्लाह (नाव चलाने वाला) बहुत अच्छी तरह से नाव चला रहा था तभी अचानक भयंकर आंधी आई और नाव डगमगाने लगी, उसमें पानी भर गया, नाव डूबने ही वाली थी कि पणिक मुनिराज ने आत्मा का ध्यान लगाया और शुक्लध्यान पूर्वक केवलज्ञान की प्राप्ति की और तुरन्त ही मोक्ष की प्राप्ति की और अनन्त काल के लिये संसार सागर से पार हो गये।

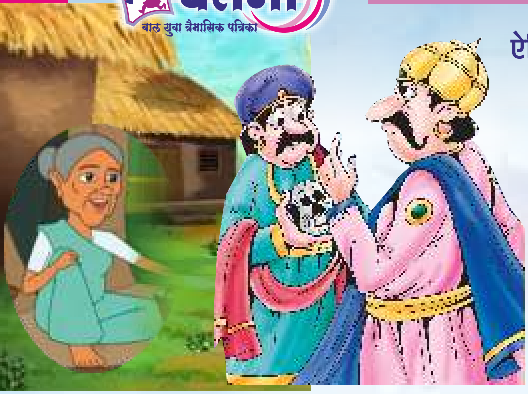

ऐतिहासिक प्रसंग -

पहेलियाँ

एक बार राजा भोज कवि माघ के साथ घूमने के लिये जंगल में गये। जंगल में दोनों रास्ता भूल गये। घूमते-घूमते एक झोपड़ी के पास पहुँच गये। वहाँ एक बूढ़ी महिला चरखे पर सूत बना रही थी। राजा ने उससे कहा - माता! हम पथिक हैं, रास्ता भूल गये हैं, हमें अवंती देश का मार्ग बताने की कृपा करें। यह सुनकर वृद्ध महिला ने गंभीरता से कहा - बेटा! दुनिया में तो दो ही पथिक हैं, तुम तीसरे पथिक कहाँ से आ गये? राजा ने आश्चर्य से पूछा - हमें अतिथि समझकर मार्ग बता दीजिये। वृद्धा बोली - अतिथि तो दो ही हैं तुम तीसरे कहाँ से आ गये? राजा बोला - तो मुझे अवंती देश का राजा समझकर मार्ग बता दीजिये। वृद्धा बोली - राजा तो दो ही होते हैं तुम तीसरे राजा कहाँ से आ गये? अब राजा को थोड़ा क्रोध आने लगा परन्तु उसने शांत भाव रखते हुये कहा - ठीक है, हम समतावान हैं, अब तो रास्ता बता दीजिये। वृद्धा फिर गंभीरता से बोली - समता धारण करने वाले तो दो ही होते हैं तुम तीसरे कहाँ से आ गये? अब राजा निराश और दुःखी हो गया। सोचने लगा कि इस वृद्ध माता को क्या कहें ? कुछ समझ में नहीं आ रहा।

माघ कवि यह सब सुनकर समझ गये यह वृद्ध महिला बहुत बुद्धिमान है तो उन्होंने हाथ जोड़कर कहा - माते! हम तो आपसे हार गये, अब तो रास्ता बता दीजिये इस पर वृद्धा बोली - संसार में हारे हुये तो दो ही हैं, तुम कहाँ से आ गये ? फिर माघ कवि ने कहा - माताजी! आप बहुत अनुभवी हैं, हमारी आपसे विनय है कि आप ही इन पहेलियों का उत्तर देकर हमें अवंती देश का रास्ता बतायें।

वृद्धा बोली - पथिक दो ही हैं - सूर्य और चन्द्रमा। अतिथि दो हैं - यौवन और धन। समतावान दो हैं - पृथ्वी और स्त्री। हारे हुये भी दो हैं - एक कर्ज लेने वाला और कन्या का पिता। वृद्धा के उत्तर सुनकर दोनों प्रसन्न हो गये। फिर वृद्धा ने अवंती का रास्ता भी बता दिया।

ठीक इसी तरह हमें शास्त्र का ज्ञान होते हुये भी उसके भाव की अनुभूति नहीं होती तो हमें मोक्षमार्ग नहीं मिलता। वृद्धा माता का अर्थ यहाँ अपना आत्मा समझना

चाहिये, सूर्य और चन्द्र उत्पाद - व्यय हैं जो कि निरन्तर चलते रहते हैं, यौवन और धन मेहमान की तरह हैं, आते हैं और चले जाते हैं वे आत्मा के साथी नहीं हैं, राजा दो हैं अर्थात् अपना आत्मा और उसके अनंत गुण, दो समतावान में पृथ्वी का अर्थ ज्ञान की विशालता अर्थात् पूरे विश्व को जानने पर भी ज्ञान में विकार नहीं होता और स्त्री का अर्थ आनन्द की पर्याय, हारे हुये दो में कर्जदार का अर्थ राग द्वेष का परिणाम जिसके पास रहेगा वह सदा दुःखी रहेगा, कन्या का पिता का मतलब अपने उपयोग का बाहर रहना जो व्यक्ति अपने उपयोग का बाहर में लगायेगा वह सदा संसार में भ्रमता रहेगा। इसलिये सदा अपने ध्रुव आत्मा का अभ्यास करना चाहिये।

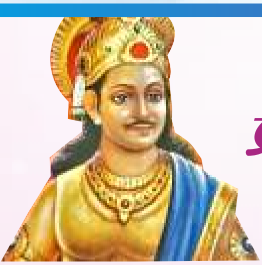

प्रेरक प्रसंग

प्रतिमा का महत्व

एक बार अलवर के महाराज ने स्वामी विवेकानन्द की प्रसिद्धि सुनकर उनको अपने राज्य में आने का आमंत्रण दिया और स्वागत के बाद उनसे पूछा - स्वामीजी! पत्थर, मिट्टी या लकड़ी आदि की मूर्ति पूजा से क्या लाभ होता है ?

इस प्रश्न के उत्तर में स्वामीजी ने दीवार पर लगी हुई राजा की फोटो को उतरवाया और दीवान साहब से उस पर थूकने के लिये कहा। दीवान साहब घबराकर बोले - ऐसा कैसे हो सकता है? ये तो महाराजा की फोटो है।

स्वामीजी ने समझाते हुये कहा - क्या इसमें महाराज बैठे हैं? ये तो कागज का एक टुकड़ा है। दरबार का कोई भी व्यक्ति फोटो पर थूकने को तैयार नहीं हुआ। सब बोले - यह तो महाराजा का अपमान होगा। तब स्वामीजी बोले - आपमें किसी की भी हिम्मत इस फोटो पर थूकने की नहीं हुई क्योंकि इस फोटो से आपको महाराज याद आते हैं, थूकने से उनका अपमान लगता है। इसलिये जो सम्मान महाराजा का है वही उनकी फोटो का है। इस प्रकार पत्थर को कोई नहीं पूजता, सब भगवान की छबि की पूजा करते हैं। यह चित्र, मूर्ति भगवान की नकल है परन्तु इससे असली का ज्ञान होता है।
यह सुनकर महाराज की शंका दूर हो गई।

ऐसे ही जिनमंदिर में विराजमान जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा से जिनेन्द्र भगवान के स्वरूप का ज्ञान होता है और इससे अपनी आत्मा का स्वरूप का ज्ञान भी होता है।

सीमा

व्रजगिरि नगर पर राजा वज्रपाल का राज्य करता था। उसके मन में चक्रवर्ती बनने की इच्छा थी इसलिये उसने अनेक देशों के साथ युद्ध करके उन्हें जीत लिया और अपने को चक्रवर्ती समझने लगा। परन्तु उसे इतने से संतुष्टि नहीं हुई, उसकी इच्छा और बढ़ती रही। वह सोचने लगा कि जीतने के लिये अभी और अनेक देश बाकी हैं।

वज्रपाल की पूणरेखा नाम की एक ही लड़की थी। वह बहुत बुद्धिमान और विवेकी कन्या थी। उसे अपने पिता की राज्यों को जीतने की इच्छा अच्छी नहीं लगती थी। जब उसे लगता कि उसके पिता इस राज्य को जीतने के बाद युद्ध करना बन्द देंगे, लेकिन वे एक राज्य जीतने के बाद दूसरा राज्य जीतने की तैयारी शुरु कर देते थे।

एक दिन रात्रि में वज्रपाल अपनी बेटी से मिलने गये तो देखा कि पूर्णरेखा महल की छत पर आकाश की ओर देख रही थी। पिता ने पूछा - बेटी! इस अंधेरे में यहाँ क्या कर रही हो ?

आसमान की ओर देख रही हूँ पिताजी! - पूर्णरेखा ने आसमान में देखते हुये जबाब दिया।

आसमान में इतने ध्यान से क्या देख रही हो बेटी ?

पिताजी आप भी देखिये ना। आकाश इतना विशाल है और असीमित है फिर भी ये तारे अपने राशि चक्र की सीमा में ही घूम रहे हैं, ये विशाल आकाश की ओर न जाकर अपनी मर्यादा में ही रहते हैं। यही सोचकर आश्चर्य हो रहा है। बुद्धिमान पूर्णरेखा की बात का भाव वज्रपाल समझ गये और उसने युद्ध करना बन्द कर दिया।

ऐसे ही हम संसारी एक भोग सामग्री मिलने के बाद दूसरी भोग सामग्री की दौड़ प्रारम्भ कर देते हैं और इसी दौड़ में जीवन समाप्त हो जाता है।

चहकती चेतना की सदस्यता अब पेटीएम से भी

चहकती चेतना का लाभ सभी को सरलता से मिल सके और सभी आसानी से इसके सदस्य बन सकें - पेटीएम भुगतान सुविधा प्रारम्भ की गई है। अब आप सदस्यता शुल्क 9300642434 पर पेटीएम से भी जमा कर सकते हैं। आप राशि बैंक अथवा पेटीएम से जमा कर अपना पूरा पता हमें व्हाट्सएप / SMS करें।

क्या दूध अभक्ष्य है...

दूध का सेवन हजारों वर्षों से सात्विक भोजन का अंश रहा है। आज वर्तमान में कुछ लोग दूध को मांस के समान अभक्ष्य सिद्ध करने में लगे हुये हैं। तो क्या दूध वास्तव में अभक्ष्य है या दूध के सेवन से मांस के सेवन का दोष लगता है आइये इन बातों का विचार करते हैं -

जैन पुराणों में स्पष्ट उल्लेख है कि मुनि ऋषभदेव ने सर्वप्रथम आहार में इक्षु रस लिया था और शेष 23 तीर्थंकरों ने श्रेष्ठ अन्न (खीर) का आहार लिया था। कहा गया है -

आद्येनेक्षुरसो दिव्यः पारणायां पवित्रितः।
अन्यैर्गोक्षीर निष्पन्नपरमान्नमलालसैः।। 60-238।।

यदि दूध का सेवन मांस के समान होता तो सकल विश्व के कल्याण की कामना करने वाले तीर्थंकर मुनिराज दूध को आहार में क्यों ग्रहण करते ? जैसे मधुर होते हुये भी मधु (शहद), मक्खन आदि को जीव हिंसा सहित होने से जिनागम में त्यागने योग्य कहा है उसी प्रकार भगवान की वाणी में दूध को भी जीव हिंसा सहित बताकर त्याग करने का उपदेश आता परन्तु जिनागम में दूध के त्याग का उपदेश इस प्रकार नहीं मिलता। इतना अवश्य ध्यान देने योग्य है कि दूध दुहने के अंतर्मुहूर्त अर्थात् 48 मिनिट के पूर्व उसे गर्म करने से वह निर्दोष हो जाता है ऐसा जैनागम में निर्देश है। 48 मिनिट के पूर्व गर्म न करने से वह उसके बाद अभक्ष्य हो जाता है परन्तु इसके बाद भी मांस सेवन के समान दोष नहीं लगता।

दूध के विषय में आयुर्वेद शास्त्र कहता है गाय-भैंस जब भोजन ग्रहण करते हैं तो वह भोजन सर्वप्रथम खल भाग रूप परिणमित होता है, इसके बाद वह रस बनता है और उसके बाद दूध का रक्त बनता है। दूध को गोरस कहने से स्पष्ट है कि वह रसरूप पर्याय है। दूध दुहने से गाय-भैंस कमजोर नहीं होती, किन्तु रक्त खून निकलने से वह कमजोर होती है, उसे पीड़ा भी होती है, दूध उसके शरीर का हिस्सा नहीं है। दूध के सेवन से सरल परिणामों का उदय होता है जबकि रक्त, मांस का सेवन करने वाले मनुष्य राक्षसी परिणाम वाले हो जाते हैं। दूध के सेवन में मांस सेवन का दोष माना जाये तो सभी मुनिराज, श्रावक, त्यागी, विद्वान भी मांसाहारी कहलायेंगे और सभी मनुष्य मांसभक्षण करने वाले कहलायेंगे क्योंकि सभी मनुष्य बाल अवस्था में माता के दूध पीकर विकास को प्राप्त करते हैं। शरीर की रचना की दृष्टि से मानव शरीर की समानता शाकाहारी प्राणियों के साथ होती है मांसभक्षियों के साथ नहीं।

जो दूध को दोष सहित मानते हैं तो वे पानी भी नहीं पी सकते क्योंकि पानी में सदा जलचर जीवों का निवास होता है, उनका जन्म-मरण पानी में ही होता है, उनका मल-मूत्र पानी में मिलता है इसके बाद भी पानी को पवित्र पदार्थ माना जाता है। इस तरह स्पष्ट है कि मर्यादापूर्वक किया गया दूध का सेवन अभक्ष्य नहीं है।

दूसरा पहलू - वर्तमान परिवेश में धन कमाने की लालसा में अनेक स्थानों पर गाय - भैसों से दूध प्राप्त करने के लिये क्रूर तरीके अपनाये जा रहे हैं। उन्हें जबरदस्ती कृत्रिम साधनों से गर्भवती किया जाता है, दूध निकालने के लिये मशीनों का प्रयोग किया

जाता है, दूध निकालने से पहले उन्हें अधिक दूध के लिये इंजेक्शन लगाये जाते हैं, उनके बच्चों को अपनी ही माँ का दूध उचित मात्रा में पीने नहीं दिया जाता। मैंने स्वयं देखा है कि कई दूध डेयरियों में जब किसी गाय-भैंस का बच्चा जन्म लेने के कुछ दिन बाद मर जाता है तो उस बच्चे की खाल में भूसा भरकर उसे उसकी माँ के सामने खड़ा कर दिया जाता है इससे उसकी माँ को उस मृत खाल में ही अपने बच्चे होने का भ्रम होता है और वह उसे दुलार करते हुये दूध देती रहती है, जब ये पशु दूध देना बन्द कर देते हैं तो इनमें से अधिकांश को कत्लखाने भेज दिया जाता है या उन्हें खुला छोड़ दिया जाता है। निःसन्देह यह सब बहुत दुःखद है और इसे रोका जाना चाहिये। यदि क्रूरता के आधार पर कोई दूध का त्याग करता है और दूध का त्याग करने की प्रेरणा देता है तो उसकी बात इस स्तर पर सही है लेकिन यह क्रूरता हर डेयरी में होती है ऐसा भी नहीं है। आज भी हजारों गांवों और शहरों की कई डेयरियों में कृत्रिम साधनों के प्रयोग के बिना भी दूध निकाला जाता है, इन पशुओं को परिवार के सदस्य की भांति प्रेम से रखा जाता है और उनकी सेवा की जाती है। चहकती चेतना का यह लेख किसी भी प्रकार की पशु हिंसा का समर्थन नहीं करता ।

आजकल वीगन के नाम पर बादाम आदि से भी दूध बनाने की विधि बताई जा रही है, लेकिन मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग के परिवारों में बादाम से दूध बनाने आदि की विधि रोज नहीं की जा सकती। दूध का निषेध मात्र दूध का ही नहीं, दूध से बनने वाले दही, छांछ, मावा, मिठाई, रसगुल्ला आदि सभी का निषेध होगा। मेरे व्यक्तिगत विचार से दूध के निषेध से पहले होटलों का महाअभक्ष्य भोजन, ब्रेड, बाजार का केक, साबूदाना, मांस मिश्रण वाली चॉकलेट, मैगी, बिस्कुट, कोकाकोला, पेप्सी जैसी चीजों का निषेध किया जाना चाहिये इसके बाद दूध के निषेध की बात समाज के सामने रखनी चाहिये।

एक बार एक स्वाध्याय सभा में (इस सभा में मैं स्वयं उपस्थित था) एक त्यागी प्रवचनकार ने बच्चों से नाश्ते में उनकी मनपसंद चीज पूछी तो अधिकांश बच्चों ने अपनी पसंद पोहा बताया। इस पर उन त्यागी विद्वान ने पोहा में कई दोष गिनाते हुये उसे छोड़ने की प्रेरणा दी। इसमें कोई शंका नहीं है पोहा के बनने की विधि में उसे अनछने पानी में भिगोया जाता है इसलिये वह दोषपूर्ण है। लेकिन समस्या यह हुई बच्चों ने अपने घर में पोहा न खाने की जिद पकड़ ली जिससे महिलाओं के सामने संकट खड़ा हो गया कि पोहा तो बहुत जगह प्रयोग होता है उसका विकल्प क्या रखा जाये? और मजे की बात यह है वे ही बच्चे चॉकलेट, बिस्कुट आदि बड़े शौक से खाते हैं। इसलिये वक्ताओं को भी श्रोताओं की भूमिका अनुसार उपदेश देना चाहिये। जरूरी नहीं कि जो काम वक्ता या त्यागी करते हैं वह काम सब करें। समय अनुसार समझ आने पर और पापों का विचार होने पर सभी अभक्ष्य चीजें क्रमशः छूटतीं ही हैं।

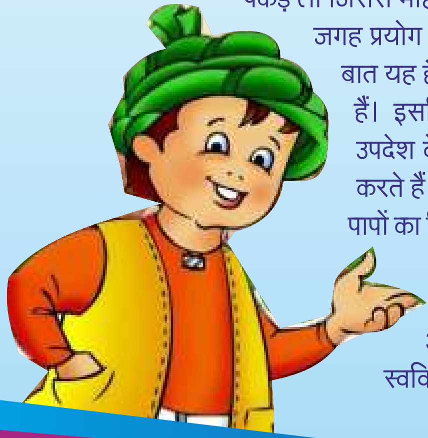

समग्र रूप से विचार करें तो दूध पीना मांसाहार तो कदापि नहीं है, फिर अन्य कारणों से आप दूध का सेवन करें या न करें ...यह आपके स्वविवेक पर निर्भर है।

- विराग शास्त्री, जबलपुर

प्यारी कवितायें

सबसे प्यारा

एक था चेतन गतियाँ चार,
दुख का देखा कभी न पार।
नरक तिर्यन्च में आये,
नर-सुर गति में दुख पाये।
चार गति से थककर आये,
जिनवाणी के वचन सुहाए,
हमने देखा है जग सारा,
भगवान आत्मा सबसे प्यारा।।

दादाजी की सीख

चिंटू मिंटू सदा ही लड़ते, बात-बात में खूब झगड़ते।
चिंटू ने मिंटू को पीटा, बाल पकड़के खूब घसीटा।।
मिंटू ने चिंटू को पकड़ा, पटक पटक धरती पर रगड़ा।
दोनों के ही सिर झन्नाये, दोनों के दादाजी आये।।
लड़ने के सब दोष गिनाये, प्रेम मित्रता के गुण गाये।
फिर दोनों का मेल कराया, चिंटू मिंटू ने सुख पाया।।

चींटी से शिक्षा

देखो-देखो चींटी चलती,
देखो-देखो चींटी चलती।
लाइन बनाके चींटी चलती,
श्रम का सबको पाठ पढ़ाती।।
हम जैसे हैं वे भी जीव,
उनकी रक्षा करो सदीव।
नीचे देख-देखकर चलना,
नहीं दबाना नहीं सताना।।

रचनाकार - ब्र.सुमतप्रकाशजी जैन खनियाँधाना

बाजार का भोजन... न बाबा न..

बाजार का भोजन अशुद्ध तो है ही, साथ में बहुत घातक है। लापरवाही की हद देखिये एक व्यक्ति बाजार से ब्रेड लाया तो ब्रेड में छिपकली निकली। यदि जरा भी चूक होती तो क्या होता आप स्वयं सोच सकते हैं ...

मैगी कम्पनी का नया प्रोडक्ट मैगी नूडल्स बीफ फ्लेवर बाजार में आया है। यद्यपि यह प्रोडक्ट दुबई में लांच किया गया है परन्तु इससे कम्पनी की नीति मालूम चलती है। यदि आप मैगी खाते हैं तो उस कम्पनी की नीतियों का समर्थन करते हैं और यह मांस का समर्थन होगा।

आप विचार करें ....

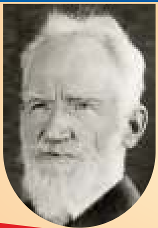

हिन्दुस्तान टाइम्स के सम्पादक गांधीजी के सुपुत्र देवदासजी गांधी द्वारा इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध लेखक जार्ज बर्नाड शॉ से पूछा - आपको सबसे प्रिय धर्म कौनसा लगता है उन्होंने उत्तर दिया - जैन धर्म। उनसे फिर पूछा - इसका क्या कारण है उन्होंने कहा - जैन धर्म में आत्मा की पूर्ण उन्नति तथा पूर्ण विकास की प्रक्रिया बताई गई है। इस कारण मुझे जैन धर्म सबसे अधिक प्रिय है।

हमारा गौरवशाली इतिहास

जगन्नाथपुरी के मंदिर में भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि भारतवर्ष में हजारों वर्ष पहले एक मात्र दिगम्बर जैन धर्म ही व्याप्त था। समय के साथ अनेक मुस्लिम और अन्य धर्म के अनुयायियों ने जैन मंदिरों को नष्ट कर दिया, अनेक जैन मंदिरों को परिवर्तित कर मस्जिद बना दिया गया, अनेक जैन मंदिरों को हिन्दू धर्म के मंदिरों में परिवर्तित कर दिया गया।

उड़ीसा की जगन्नाथपुरी में हिन्दू समाज को विशाल मंदिर है। पूरे उड़ीसा में भगवान जगन्नाथ के प्रति हिन्दुओं की गहरी आस्था है। इसकी प्रतिवर्ष एक रथयात्रा का भी आयोजन किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि जगन्नाथपुरी का पूर्व नाम जिननाथपुरी थी जो बाद में जगन्नाथपुरी हो गया। जगन्नाथपुरी के मंदिर के दक्षिण द्वार पर भगवान ऋषभदेव की दिगम्बर खड्गासन प्रतिमा आज भी विद्यमान है। इसी तरह की एक और प्रतिमा गर्भगृह के प्रवेश द्वार के पास लगी है।

प्राचीन भारतीय धर्मशास्त्रों के जानकार और भारत के प्रसिद्ध लेखक-वक्ता श्री देवदत्त पटनायक ने जैन प्रतिमा विराजमान होने की पुष्टि की है।

समाचार

मुम्बई में हुआ अन्तर्मुम्बई पाठशालाओं का सम्मेलन

JAINEXT - The Next Generation Jains संगठन के द्वारा आयोजित **Inter Mumbai Pathshala Competition 2020 (IMPC)** श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट, पार्ला-सांताकुझ के सौजन्य से श्री सीमंधर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर, विलेपार्ले में दिनांक 16 फरवरी 2020 को सानन्द संपन्न हुआ।

इस एक दिवसीय आयोजन में मुम्बई के उपनगरों की 23 पाठशालाओं के चयनित 300 छात्र-छात्राओं को मिलाकर लगभग 500 साधर्मियों ने सहभागिता की। इस अभिनव आयोजन में प्रातः 7 बजे से लेकर रात्रि 8 बजे तक आयोजित कार्यक्रमों में जिनेन्द्र पूजन और पूज्य गुरूदेवश्री प्रवचन के साथ भजन, भाषण, कथा वाचन, अन्ताक्षरी, लघु नाटिका, चित्रकला, निबन्ध आदि 11 प्रतियोगितायें आयोजित हुईं। इसमें श्रेष्ठ प्रस्तुति करने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया। इस अनूठे आयोजन का उद्देश्य मुम्बई की पाठशालाओं को सक्रिय कर उन्हें एक सही प्लेटफार्म प्रदान करना था। इस कार्यक्रम की सफलता को देखते हुये यह कार्यक्रम निरन्तर चलाये रखने का संकल्प व्यक्त किया गया।

भोपाल की प्रसिद्ध जामा मस्जिद है प्राचीन जैन मंदिर

दिगम्बर जैन धर्म का गौरव सदा उन्नत रहा है। जैन धर्म के विद्रोही राजाओं ने जैन धर्म के विध्वंस के अनेक उपाय किये, जैन मंदिरों को तोड़ा गया, उनकी प्रतिमायें नष्ट की गईं, यहाँ तक कि जैन मंदिरों को तोड़कर उनके स्थान पर मस्जिद और हिन्दू मंदिर स्थापित कर दिये गये, जैन साहित्य का भरपूर मात्रा में जलाया गया, जैन धर्म के अनुयायियों को धर्म बदलने पर मजबूर किया गया, रात्रि न भोजन करने वाले जैन श्रावकों को दण्ड दिया गया, इस तरह की अनेक भयंकर आपदाओं के बाद भी दिगम्बर जैन धर्म के गौरव आज अखण्ड है। आपको जानकर आश चर्य होगा कि मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के बीच चौक नामक स्थान पर एक विशाल जामा मस्जिद है। यह मस्जिद मुस्लिम मत मानने वालों के लिये आस्था का महत्वपूर्ण केन्द्र है। इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि यह मस्जिद राजा भोज के समय विशाल जैन मंदिर था। सन् 1825 में जब भोपाल रियासत पर कुदसिया बेगम का शासन था तब बेगम ने व्यक्तिगत लाभ के लिये इस जैन मंदिर को मस्जिद में परिवर्तित करवा दिया और मंदिर के लिये दूसरा स्थान दिया। **है न आश्चर्य पर है सत्य।**

साभार - सन्मति संदेश पत्रिका जुलाई 1963   लेखक : श्री गुलाबचन्द पाण्ड्या, भोपाल

दिनांक 10 मई को मुम्बई निवासी श्री जीतमलजी जैन का 75 वर्ष की उम्र में पंच परमेष्ठी और आत्म स्वरुप का चिंतन करते हुये अत्यंत शांत परिणामों से निधन हो गया। आप श्री कमलेशजी, मुकेशजी, विनोदजी, कैलाशजी के पिता थे। श्री जीतमलजी मुम्बई के जवेरी बाजार स्थित श्री सीमंधर जिनालय के नियमित सदस्य थे और अत्यंत शांत परिणामी और सरल ह्रदयी साधर्मी थे। कुछ समय पूर्व ही आपने महाराष्ट्र के हेरले में हुये पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव भगवान के पिता बनने का लाभ प्राप्त किया था। आपका पूरा परिवार जिनधर्म की प्रभावना में तन-मन-धन से समर्पित रहता है।

मुझे सदा पारिवारिक सदस्य की भांति स्नेह वाले आदरणीय जीतमलजी का वियोग मेरे लिये व्यक्तिगत क्षति है। वे अपने जिनधर्म की रुचि के संस्कारों के बल पर भव अभाव की ओर प्रयाण करें - चहकती चेतना परिवार ऐसी कामना करता है।

23 मई को प्रातःकाल परिवार के सदस्यों के मध्य ही शांति विधान का आयोजन किया गया और दोपहर में ऑनलाइन स्मरण सभा का आयोजन किया गया, इस सभा में श्री महिपाल जी ज्ञायक बांसवाड़ा श्री अजित जैन बड़ोदरा, श्री वीनू भाई शाह मुंबई, श्री उल्लासभाई जोबालिया मुंबई आदि अनेक साधर्मियों ने श्रद्धांजलि व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन विराग शास्त्री द्वारा किया गया।

विराग शास्त्री,जबलपुर संपादक

विज्ञान वाटिका प्रतियोगिता में सहभागिता कीजिये : ज्ञान वृद्धि के साथ पाईये आकर्षक पुरस्कार

परमागम प्रभावना ट्रस्ट - पुणे द्वारा एवं

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन उज्जैन शाखा और उस्मानपुर, दिल्ली के द्वारा प्रकाशित

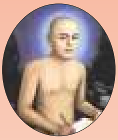

षष्ठम् पुष्प

विज्ञान वाटिका

राष्ट्रीय स्तर की ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता :

प्रतियोगिता आधार : जैन सिद्धान्त

प्रवेशिका जमा करने की अंतिम तिथि : 15 अक्टूबर 2020

पायें ढेरों आकर्षक उपहार

प्राप्ति स्थान : अमित जैन, दिल्ली 9811393356

आप अपना पूरा, प्रति की संख्या के साथ व्हाट्सएप करें और पायें निःशुल्क विज्ञान वाटिका

प्रसंगिक गीत

समय समय पर जान लो

समय, समय पर जान लो, समय की यह पुकार है।
समय सभी से कहा, यह समय ही सार है ।।

आत्म की विराधना का फल जगत भुगत रहा ।
मुक्त रुप है मेरा, पर बंध में सिसक रहा ।।
बंध में ही मुक्त देख, शेष सब असार है ।
समय सभी से कह रहा, यह समय ही सार है ।।

बंद हो शिकायतें, शिकायतों में कुछ नहीं ।
आत्म वंचना से बड़ा, कोई जग में छल नहीं ।।
ना निराश हो उदास, यह कर्म का व्यापार है ।
समय सभी से कह रहा, यह समय ही सार है ।।

कश्मकश अजब सी थी, न आत्म भान कर रहा ।
अब स्वयं से बात कर, समय भी तुमको दे दिया ।।
चेत चेत चेतना, तुझमें बल अपार है ।
समय सभी से कह रहा, यह समय ही सार है ।।

दुर्गति की यातनाएं, इससे भी अजब रही ।
वीतराग कह रहे, ये यातना तो कुछ नहीं ।।
करो ना भूत का विचार, समय की हुंकार है ।
समय सभी से कह रहा, यह समय ही सार है ।।

जो जगत आधार थे, संयोग वे ही मौन हैं ।
क्रूर काल हंस रहा कि मुझसे बली कौन है ?
मिथ्या मद की चूरता में ही, जगत का उद्धार है ।
समय सभी से कह रहा, यह समय ही सार है ।

आन बान शान के प्रतीक सब धरे रहे ।
जो सहारे थे जगत के, यूं ही सब पड़े रहे ।।
जीव अब समझ जरा, क्यों ना अब विचार है ।
समय सभी से कह रहा, यह समय ही सार है ।

युद्ध की ये भेरी है, और तुम अभी से डर रहे ।
मृत्यु जाने होगी कब, पर अभी से मर रहे ।
है क्षणिक ये विश्वता, ध्रुव स्वभाव सार है ।
समय सभी से कह रहा, यह समय ही सार है ।।

अपने घर में रहके भी, घर से ही सबब नहीं ।
आत्म को ही आत्मा की, आज तक खबर नहीं ।
विडंबना ये तोड़ दें, मनुष्यता का सार है ।
समय सभी से कह रहा, यह समय ही सार है ।।

समय-समय पर जान लो, समय की यह पुकार है ।
समय सभी से कह रहा, यह समय ही सार है ।।

विराग शास्त्री, जबलपुर

भारत की वीर महिलायें

वीर रानी रुदाबाई

भारत की मिट्टी ने हजारों वीरांगनाओं का जन्म दिया है, इन वीरांगनाओं ने देश की रक्षा, शील सुरक्षा के लिये सहर्ष अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। आजकल की चंचल चित्त वाली और अपने रूप को ही सर्वस्व समझने वाली युवतियों के लिये यह कहानी आदर्श है।

15 वीं शताब्दी ईस्वी सन् 1460-1498 में गुजरात के पाटन राज्य में राणा वीर सिंह बाघेला का राज्य था, इनकी रानी का नाम रुदाबाई अर्थात् रूपबा था। रानी अत्यंत सुन्दर थी। पाटनी राज्य बहुत समृद्ध और वैभवशाली राज्य था। तुर्क राजाओं ने अनेक बार इस राज्य को जीतने के लिये आक्रमण किये परन्तु हर बार उन्हें हार ही मिली। सन् 1497 में सुल्तान बेघारा ने अपनी 40 हजार सैनिकों की सेना के साथ पाटन पर आक्रमण किया पर राणा वीर सिंह की मात्र 2800 सैनिकों की वीर सेना ने सुल्तान बेघारा को हरा दिया। दूसरी बार सुल्तान बेघारा ने फिर आक्रमण की योजना बनाई, इस बार राणा वीर सिंह के साथ रहने वाले मित्र धन्नू साहूकार ने वीर सिंह को धोखा दिया और सुल्तान से जाकर मिल गया। उसने सुल्तान ने साहूकार से कहा यदि तुम मेरा साथ दोगे तो जो तुम चाहोगे वह तुम्हें दूँगा। इस पर साहूकार ने कहा कि ठीक है, मैं इस युद्ध में तुम्हारा साथ दूँगा इसके बदले मुझे उसकी सम्पत्ति चाहिये। सुल्तान पाटन राज्य के साथ-साथ रानी रुदाबाई को अपने साथ अपने महल में रखना चाहता था। साहूकार ने सुल्तान को पाटन की सारी गुप्त जानकारी दे दी। सुल्तान ने समय आने पर अपनी विशाल सेना के साथ पाटन पर हमला कर दिया, राणा ने भी हार नहीं मानी और अपनी पूरी शक्ति से सुल्तान से लड़े पर साहूकार ने पीछे से राणा पर हमला दिया जिससे राणा वीर सिंह की मृत्यु हो गई। सुल्तान जीत गया और जीत के बाद साहूकार ने सुल्तान को उसका वचन याद दिलाया पर सुल्तान ने कहा जो व्यक्ति अपने राजा से विश्वासघात कर सकता है वह मेरे साथ क्या वफादारी करेगा और सुल्तान ने साहूकार को हाथी के पैर के नीचे कुचलकर मार डालने का आदेश दे दिया और साहूकार की पत्नी और उसकी बेटी को अपने सिपाही के साथ भेज दिया।

इसके बाद सुल्तान अपने 10000 सैनिकों को लेकर रानी रूपबा के रूप पर मोहित होकर उसे पाने के लिये उसके महल की ओर बढ़ा।

रानी रूपबा ने महल के ऊपर ही 2500 वीर महिलाओं की एक छोटी सेना बनाई थी जो कि रानी रूपबा के आदेश पर कुछ भी करने के लिये तैयार थीं। रानी सौन्दर्य की धनी होने के साथ-साथ अत्यंत बुद्धिमान भी थी। वह समझ गई कि सुल्तान वासना में अंधा हो गया है और इसके साथ युद्ध करने से भी सफलता नहीं मिलेगी। इसलिये उसने सुल्तान को अपने महल में आने का प्यार भरा संदेश भेजा। संदेश को पाकर सुल्तान खुश हो गया। जैसे ही सुल्तान महल में आया और रानी को गले लगाने के लिये आगे बढ़ा रानी ने उसके सीने में खंजर चाकू डाल दिया इससे सुल्तान की तुरन्त मृत्यु हो गई। यह समाचार जैसे ही सैनिकों को मिला तो वे आक्रमण करने के लिये आगे बढ़े परन्तु महिला सैनिकों ने महल के ऊपर से बाणों की बौछार कर दी और कुछ ही देर में हजारों सैनिकों की लाशें गिर गईं और अनेक सैनिक भाग गये। बाद में रानी रूपबा ने सुल्तान का सिर पाटन राज्य के बीच में टंगवा दिया और चेतावनी दी कि जो भी व्यक्ति किसी हिन्दुस्तानी नारी का शील भंग करने का साहस करेगा उसका भी यही हाल किया जायेगा।

ऐसी थीं हमारे देश की शीलवती नारियाँ।

सहयोग प्राप्त

11000/- **श्री सुनील जैन,** वस्त्रापुर, अहमदाबाद ने आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर की सहायक सदस्य के रूप में प्रदान किये।

11000/- मलाड, मुम्बई निवासी श्री दीपकजी जैन और श्रीमति सीमा गांधी की पुत्री सौ.नियति शुभ विवाह मुम्बई निवासी श्रीमति आशा अल्केश भाई शाह के सुपुत्र चि. अक्षय के साथ 1 मार्च को सम्पन्न हुआ। इस मांगलिक प्रसंग पर संस्था को 11000/- की राशि प्रदान की गई। नव विवाहित दम्पत्ति के सुखद धर्ममय मंगल जीवन की मंगल कामना।

5100/- ख्याति प्राप्त युवा विद्वान पण्डित श्री नीलेशभाई आर. शाह, मुम्बई द्वारा चहकती चेतना के प्रचार-प्रसार हेतु प्राप्त।

2200/- ध्रुव जैन - चेतन जैन (20 अप्रेल) और आरुषी जैन (4 मई) के जन्मदिवस पर उनके दादा श्री अनिल कुमार जैन, आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा प्राप्त।

5000/- श्री मुक्ति मण्डल संघ, हस्ते डॉ. बासन्ती बेन, सॉयन- मुम्बई द्वारा प्राप्त।

500/- श्री संकेत कोटड़िया, हिम्मतनगर द्वारा प्रचार-प्रसार हेतु प्राप्त।

चार बातें

एक नगर में धनवान सेठ लक्ष्मीचन्द रहता था। वह अत्यंत बुद्धिमान और विवेकवान था। उसके चार पुत्र थे। कर्म उदय की विचित्रता के कारण उन चारों पुत्रों की बुद्धि सामान्य थी और उनका मन पिता के व्यवसाय में बिल्कुल भी नहीं लगता था। सेठ ने उन्हें हर प्रकार से समझाने का प्रयास किया परन्तु असफल ही रहा। वृद्धावस्था आने पर सेठ ने अपनी सम्पत्ति का बंटवारा चारों पुत्रों में कर दिया। पुत्रों की लापरवाही और स्वयं की वृद्धावस्था के कारण व्यापार चौपट हो गया और सारा धन समाप्त हो गया। चारों ने सोचा कि पिताजी ने जरूर कुछ धन छिपाकर रखा होगा। यह सोचकर वे अपने पिता के पास धन मांगने गये जिससे वे पुनः व्यापार शुरु कर सकें। पिता ने कहा - मेरे पास जो धन था वह मैंने तुम चारों में बांट दिया और जो कुछ शेष था वह व्यापार में घाटा होने से समाप्त हो गया। यह सुनकर चारों को बहुत क्रोध आया और वे अपने पिता को बेचने के लिये एक सेठ के पास गये पर सेठ ने उनके पिता को खरीदने से मना कर दिया। इसके बाद वे अपने पिता को बेचने के लिये ले एक बाजार ले गये। उस बाजार का नियम था कि यदि उस बाजार में कोई सामान न बिके तो राजा की ओर से खरीद लिया जायेगा। जब दिन भर में पिता को किसी ने नहीं खरीदा तो राजा की ओर से सैनिकों ने चार हजार रुपये देकर उस वृद्ध को खरीद लिया। उस वृद्ध को राजा के सामने प्रस्तुत किया गया। राजा को उस वृद्ध की कहानी सुनकर बहुत दया आई और उसके पुत्रों की स्वार्थवृत्ति को धिक्कारने लगा। राजा ने उस वृद्ध के रहने और भोजन की उचित व्यवस्था कर दी।

एक बार पड़ोसी ताकतवर राजा ने राजा का राज्य जीतने की योजना बनाई पर वह राजा राज्य में युद्ध के बिना ही विजय प्राप्त करना चाहता था इसलिये उसने एक संदेश राजा के पास भिजवाया कि मेरे इन चार प्रश्नों का उत्तर न देने पर आपको मेरी आधीनता स्वीकार करना होगी। राजा समझ गया कि मेरे राज्य के

पास इतनी सेना नहीं है कि उस पड़ोसी राजा का मुकाबला कर सके यदि युद्ध हुआ तो हार निश्चित है इसलिये इन प्रश्नों का सही हल खोजा जाये। राजा ने सभा बुलवाई और अपने सभी मंत्रियों और विद्वानों के सामने चार प्रश्न रखे और इनका उत्तर मांगा। पहला प्रश्न - ऐसा क्या है जो यहाँ भी है और वहाँ भी। 2.जो यहाँ पर है और वहाँ पर नहीं। 3. यहाँ पर नहीं है पर वहाँ पर है। 4. जो यहाँ भी नहीं है और वहाँ भी नहीं।

इन चारों प्रश्नों को सुनकर सबके दिमाग घूम गये कोई भी इन प्रश्नों का उत्तर नहीं बता पाया। अंत में राजा ने नगर में सूचना करवा दी कि जो भी व्यक्ति इन चारों प्रश्नों का उत्तर देगा उसे विशेष पुरस्कार दिया जायेगा। इन प्रश्नों को उस लक्ष्मीचन्द सेठ ने भी सुना और सैनिकों से इनका उत्तर देने की इच्छा व्यक्त की। दूसरे दिन दिन समय पर सेठ राजदरबार पहुँच गया और प्रश्नों का उत्तर सुनने के लिये सैकड़ों लोग एकत्रित हो गये क्योंकि इन प्रश्नों के उत्तर में ही राज्य का भविष्य निर्भर था।

सेठ ने अपनी मधुर वाणी से सभा को सम्बोधित करते हुये कहा - जो व्यक्ति पुण्य उदय से प्राप्त सम्पत्ति को दान आदि अच्छे कार्यों में उपयोग करता है वह आगामी भव में पुण्य उदय से शुभ संयोग प्राप्त करता है अर्थात् जो यहाँ भी है और वहाँ भी है।

दूसरी बात - जो व्यक्ति पुण्य उदय से प्राप्त धन-सम्पत्ति, वाणी आदि का इस भव में सदुपयोग नहीं करता उसे आगामी भव में ये शुभ संयोग कभी प्राप्त नहीं होंगे अर्थात् जो यहाँ है वह वहाँ नहीं है।

तीसरी बात - दिगम्बर मुनिराज सकल परिग्रह के त्यागी होते हैं, उनके पास बहिरंग में धागा मात्र का परिग्रह नहीं होता। यदि कोई वीतरागी मुनिराज मोक्ष प्राप्त न कर पायें तो निश्चित रूप से वे स्वर्ग आदि शुभ गति प्राप्त करते हैं और उन्हें शुभ संयोग प्राप्त होते हैं अर्थात् जो यहाँ पर नहीं है पर वहाँ पर है।

चौथी बात - अनेक गरीब लोग संयोग न होने से बहुत दुःखी रहते हैं, उन्हें पेट भर भोजन भी नहीं मिल पाता, उनका सारा जीवन भोजन और परिवार की चिन्ता में नष्ट हो जाता है, शुभ कार्य करने के लिये न तो उनके परिणाम होते हैं न उनके पास दान देने के लिये साधन। पूरा जीवन चिन्ता और दुःख में निकल जाता है और उनके पाप बंध ही होता है ऐसे जीवों को आगामी भव में भी सुखद संयोग नहीं मिलते अर्थात् जो यहाँ भी नहीं और वहाँ भी नहीं।

सेठ के इन प्रश्नों को सुनकर पूरी सभा आश्चर्यचकित रह गई और राजा ने उस वृद्ध का सन्मान किया। बाद में उन चारों प्रश्नों का उत्तर पड़ोसी राजा को भेज दिया। इन उत्तरों को पढ़कर पड़ोसी राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसने इस राज्य को जीतने की संकल्प छोड़ दिया।

क्या दिया है बॉलीवुड और टीवी ने हमारे परिवारों को..

आज के समय में मार्डन सोच, मार्डन रहन-सहन, मार्डन खान-पान हमारे स्टेटस की पहचान बन गया है। होटलों में न जाने वाले, मल्टीप्लेक्स में फिल्म न देखने वाले, फैशनेबल कपड़े न पहनने वाले, विदेश अथवा देश में न घूमने वाले आज पुरानी सोच के माने जाते हैं, उनका मजाक बनाया जाता है। इसी दिखावे के लिये आधे कपड़ों की मर्यादा विहीन फोटो सोशल मीडिया पर पोस्ट करना, मूवी देखते हुये उसके गौरव की खोखली अनुभूति को फेसबुक आदि पर भेजना, होटलों में भोजन करते हुये अपने वैभव का प्रदर्शन, जन्मदिवस की महामिथ्या खुशियों का प्रदर्शन करना हमारी झूठी शान के अंग बनते जा रहे हैं इन सबके लिये बॉलीवुड और टीवी भी जिम्मेदार है। देश की संस्कृति को नष्ट करने का संकल्प लिये हुये इन अभिनेत्रियों और अभिनेताओं ने आखिर दिया क्या है ..

1. देश में बलात्कार और सभ्य परिवारों की बेटियों और बहुओं को परेशान करने की घटनाओं में बढ़ोत्तरी।
2. बिना विवाह किये लड़के और लड़की का एक घर में रहने की गंदी संस्कृति की शुरुआत।
3. विवाह के दौरान या विवाह निश्चित होने पर लड़की का घर से भागना।
4. चोरी, डकैती और हत्या जैसे अपराधों को करने के नये-नये तरीके।
5. भारतीय संस्कृति का मजाक।
6. किशोर और युवा लड़कियों को अंग दिखाते हुये वस्त्र पहनने की शिक्षा जिसे फैशन का नाम दिया जा रहा है और साड़ी और सलवार सूट आदि पूरे अंग ढ़कने वाले वस्त्रों का उपहास।
7. शराब, नशा आदि करने के तरीके और परिवार से बचने के उपाय।
8. दाल-रोटी-सब्जी को गलत बताकर पिज्जा, बर्गर, मंचूरियन जैसे महाअभक्ष्य पदार्थों के सेवन का संदेश।
9. शुद्ध हिन्दी या संस्कृत बोलना असभ्यता और अंग्रेजी बोलना उच्च वर्ग की पहचान मानना।

10. पण्डितों और विद्वानों को जोकर के रूप में दिखाना, उनका अपमान करना और उनकी वेशभूषा का मजाक उड़ाना और दूसरी और बॉलीवुड की फिल्मों में उल्टी-सीधी हेयर स्टाइल, दाढ़ी को अलग-अलग बेहूदे रूप में रखकर अपने को महान बताना।
11. स्कूल और कॉलेजों को शिक्षा के केन्द्र न बताकर प्यार करने के केन्द्र बताना।
12. अपने माता-पिता की सेवा को गौण कर लड़की या लड़की को दुनिया का अजूबा बताना।
13. विवाह आदि महत्वपूर्ण समझदारी वाले कार्यों में लड़के-लड़की की बातों को प्राथमिकता और बुजुर्गों के अनुभव का पुराना और बकवास बताना।

और भी बहुत कुछ दे रहा है ये बॉलीवुड। यदि आप किसी भी रूप में इसका या इनमें काम करने वाले व्यक्तियों का समर्थन करते हैं या इनको पसंद करते हैं तो आप भी भारतीय संस्कृति के पतन में जिम्मेदार हैं और उनके पापों की अनुमोदना कर स्वयं महापाप का बंध कर रहे हैं और आगे आने वाली पीढ़ी को भ्रष्ट करने में सहयोगी बन रहे हैं। स्वयं विचार करें..

मैं मोबाईल हूँ

ज्यों ज्यों आपको मेरी लत लगती जायेगी त्यों त्यों मैं आप पर हावी होता जाऊँगा । मैं पहले आपकी आंखों की रोशनी छीनूँगा, फिर आपकी नींद चुराऊँगा, धीरे-धीरे आपका स्वास्थ्य खराब कर दूँगा।

मैं मोबाइल हूँ ! मै आपको न खेलने का समय दूँगा, न ही योग करने का, बल्कि आपकी काम करने की ताकत को भी आधा कर दूँगा । आप काम कम करेंगे और मुझे ज्यादा देखेंगे। मैं मोबाइल हूँ मेरा उपयोग सावधानी से करना दोस्तो ! वरना मैं आपको उन लोगों से दूर कर दूँगा जो आपको बहुत प्यार करते हैं।

मैं मोबाइल हूँ ! मेरा अधिक उपयोग करने से आपका मन चंचल हो जायेगा और फिर पढ़ने में मन नहीं लगेगा और फिर परीक्षा में नंबर भी कम आयेंगे और आपका भविष्य खराब करने का कारण बनूँगा मैं । मैं मोबाइल हूँ मैं आपको बचपन भी चुरा लूँगा, आप जल्दी ही बूढ़े हो जाओगे इसलिये मेरा प्रयोग उपयोग समझदारी से करना, मेरे फायदे भी हैं और नुकसान भी हैं।

क्या आप भी पशु हत्या में भागीदार हैं...

सिर्फ बीफ के लिए ही नहीं मारी जा रही गऊएं

स्वयं को अहिंसावादी कहने वाले, जियो और जीने दो का नारा लगाने वाले और अपने भगवान महावीर की संतान कहने वाले कहीं किसी रूप में पशु हत्या का समर्थन तो नहीं कर रहे इस पर गहराई से विचार की आवश्यकता है। आपको ज्ञात हो कि इस समय में भारत में 3600 बड़े कत्लखाने हैं जिन्हें सरकारी लायसेंस प्राप्त है, इसके अतिरिक्त लगभग 35000 की बड़ी संख्या में मध्यम और छोटे कत्लखाने हैं जिनमें से 80 प्रतिशत अवैध रूप से संचालित किये जा रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार इन कत्लखानों में प्रतिवर्ष 4 करोड़ गाय, भैंस, सुअर, ऊंट, बकरी, आदि पशुओं को मारा जाता है। इसके अतिरिक्त मुर्गियों और विशेष हिन्दू-मुस्लिम पर्वों में मारे जाने वाले पशुओं की संख्या तो हमारी सोच से ही बाहर है। इन पशुओं में सबसे अधिक गौवंश ही मारा जाता है क्योंकि गौवंश ही अनेक रूप से काम आता है। इनमें गाय के मांस से निकलने वाला तेल होता है जिसे **Beef Tallow** कहा जाता है और सुअर के मांस से निकलने वाले तेल को **Pork Tallow** कहा जाता है। इस तेल का अधिकतर उपयोग क्रीम बनाने में होता है जैसे **Fair & Lovely, Ponds, Emami** इत्यादि। ये तेल इन्हीं क्रीम बनाने वाली कम्पनियों द्वारा खरीदा जाता है। चेन्नई हाईकोर्ट में एक केस के दौरान विदेशी कम्पनी **Fair & Lovely** ने स्वयं लिखित रूप में माना था कि **Fair & Lovely** में सुअर की चर्बी का तेल मिलाते हैं।

कत्लखानों में पशुओं के खून को इकट्ठा किया जाता है इसका सबसे अधिक प्रयोग एलोपैथी दवा बनाने में किया जाता है। गाय-बैल, मछली के शरीर से निकले हुये खून से Dexorange दवा बनाई जाती है। यह बहुत ही प्रसिद्ध दवा है, इस दवा विशेष प्रयोग उन गर्भवती महिलाओं के लिये होता है जिनके

शरीर में खून की कमी हो जाती है। इसके अतिरिक्त इन पशुओं के खून का प्रयोग बड़े स्तर पर लिपिस्टिक, नेल पॉलिश बनाने में किया जाता है।

पशुओं की हड्डियों को पहले इकट्ठा करके मशीन से उसका पाउडर बनाया जाता है। इसका बड़ी मात्रा में प्रयोग कम्पनियाँ टूथपेस्ट और शेविंग क्रीम बनाने में करतीं हैं। इस हड्डी पाउडर का प्रयोग टेल्कम पाउडर में भी किया जाता है। गाय की चमड़ी का प्रयोग जूते-चप्पल, पर्स, जैकेट, बेल्ट के साथ-साथ किक्रेट और फुटबाल की चमड़े की बॉल बनाने में किया जाता है। गौवंश की आंतों से जिलेटिन (Gelatin) बनाया जाता है जिसका बहुत प्रयोग आईसक्रीम, चॉकलेट, केप्सूल आदि बनाने में किया जाता है। इसके अलावा पिज्जा, बर्गर, मैगी, हॉटडॉग, चाउमिन के बनाने में होता है और बच्चों की अत्यंत प्रिय जैली (Jelly) में भी इसका प्रयोग होता है।

नेस्ले के 'उत्पाद' में भी घोड़े का मांस!

एजेंसियां ■ रोम

खाद्य उत्पाद बनानेवाली दुनिया की सबसे बड़ी कंपनी स्विट्जरलैंड की नेस्ले का नाम उस विवाद में शामिल हो गया है, जिसमें गाय के मांस से बने उत्पादों में घोड़े के मांस की मिलावट के मामले सामने आये हैं. नेस्ले ने अपने कुछ उत्पादों में घोड़े के डीएनए मिलने के बाद इटली और स्पेन के बाजारों से अपने रेडी मेड पास्ता व्यंजन हटा लिये हैं. जर्मनी से आये मीट से बने नेस्ले के खाद्य पदार्थों में डीएनए परीक्षण के जरिये घोड़े का मांस पाया गया है. कंपनी के प्रवक्ता के मुताबिक खाद्य पदार्थों में घोड़े के मांस के अंश बेहद कम हैं लेकिन ये एक फीसदी से ऊपर पाये गये हैं?

बीबीसी हुई बातचीत में उन्होंने कहा कि जर्मनी के उनके इस सप्लायर के माल में गड़बड़ी पायी गयी है.

स्वास्थ्य पर असर: परीक्षण के बाद नेस्ले ने इटली और स्पेन से बुईटोनी बीफ रेवियोली और बीफ टॉर्टिलेनी को हटा लिया है. पिछले हफ्ते कंपनी ने कहा था कि उसके खाद्य पदार्थों में घोड़े का मांस नहीं है. मामला सामने आने के बाद कंपनी अब अपने सभी उत्पादों का परीक्षण करवायेगी.

और इनमें से अधिकांश वस्तुओं को प्रयोग स्वयं को शाकाहारी कहने वाले व्यक्ति कर रहे हैं। टीवी पर आने वाले विज्ञापनों से भ्रमित न हों और विवेकपूर्वक इन चीजों का उपयोग न करें और अपनी अहिंसा और सदाचार की संस्कृति को बचाये रखें।

- न्यूज एजेन्सी - डेली हंट

आश्चर्य किन्तु सत्य -

राजस्थान के राजवंश में जैनत्व

प्राचीन समय से ही जैनत्व के गौरव बढ़ाने में दिगम्बर मुनिराजों ने तो अपना योगदान दिया ही है, साथ ही अनेक राजाओं और श्रावकों ने भी जैन शासन के संवर्धन में अपना योगदान दिया है। राजस्थान की धरती वीर योद्धाओं की भूमि है। राजस्थान के जोधपुर के राजाओं में जैन धर्म के प्रति बहुत प्रेम रहा, यहाँ के राठौर राजाओं ने भी जैन धर्म को अपनाया। महाराजा रामपाल सिंह स्वयं तो जैन धर्म का पालन करते थे उनके पुत्र मोहनजी ने भी लगभग संवत् 1351 आचार्य शिवसेनजी के उपदेश से प्रभावित होकर जैनधर्म स्वीकार किया था।

अजमेर के चौहान वंश के राजा पृथ्वीराजजी को भी जैन धर्म इतना अनुराग था कि इन्होंने रणथम्भौर के जैन मंदिर जी के शिखर पर बहुमूल्य स्वर्ण कलश चढ़ाया था। इनके पुत्र पृथ्वीराज द्वितीय ने तो जैन मंदिरों के संचालन के लिये अनेक गांव भेंट दिये थे, इन गांवों से प्राप्त आय से जैन मंदिरों की गतिविधियों का संचालन होता था। इनके वंश में राजा सोमेश्वर प्रताप भगवान पार्श्वनाथ के परम भक्त थे, इन्होंने भगवान पार्श्वनाथ का जिनमंदिर बनाया था। सन् 1787 में इसी वंश के महाराजा विजयसिंह के समय मराठा राजाओं के आक्रमण का भरपूर सामना किया और इनके गवर्नर जैनधर्म के अनुयायी धनराज सिन्धी ने अपनी वीरता से मराठा राजाओं को भगा दिया।

राजपूत राजा तो जैन धर्म का इतना आदर करते थे कि जब भी मेवाड़ राज्य में किसी किले की नींव रखी जाती थी तो उसी समय राज्य की ओर से एक जैन मंदिर के निर्माण का संकल्प लिया जाता था। इतिहास के जानकार श्री ओझाजी के अनुसार मेवाड़ राज्य में सूर्यास्त के बाद रात्रि भोजन का निषेध था। विदेशी इतिहास के जानकार विदेशी लेखक टाड सा का कहना है कि जब भी जैन साधु उदयपुर में आते थे तो रानी उन्हें राजमहल में लाकर आदरपूर्वक उनक ठहरने और आहार आदि की व्यवस्था करती थी। सन् 1649 में चौहान राजा अल्हणदेव ने भी भगवान महावीर स्वामी के नाम से जैन मंदिर बनवाये। इनके आज्ञा पत्र के अनुसार चातुर्मास के समय बरसात का मौसम होने से जीव राशि अधिक उत्पन्न होती है इसलिये इन चार माह में तेल के कोल्हू, ईंटों के भट्टे कारखाने, कुम्हार का घड़ा आदि बनाने के कार्य और शराब की भट्टी आदि हिंसक कार्यों को कानूनी रूप से बन्द कराया जाता था।

चित्तौड़गढ़ में भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति में 70 फुट ऊंचा स्तम्भ का निर्माण कराया गया। इस कार्य से उन राजाओं की जिनधर्म के प्रति भक्ति ज्ञात होती है।

महाराणा के आज्ञा पत्र के अनुसार

1. प्राचीन काल से ही जैनियों के मंदिरों और उनके धर्म स्थानों को अधिकार मिला हुआ है, इस कारण कोई मनुष्य इनकी सीमा प्राणी वध न करे, यह उनका पुराना अधिकार है।
2. जिस प्राणी को वध के लिये अलग कर लिया गया हो और यदि वह प्राणी जैनियों के मंदिर आदि स्थान से निकलता है तो वह अभय हो जाता है, उसे फिर कोई नहीं मार सकता है।
3. राजद्रोही, लुटेरे और जेलखाने से भागे हुये महा अपराधी यदि जैनियों के धर्मशाला आदि में शरण लें तो उसे राजकर्मचारी नहीं पकड़ सकेंगे।
4. दान की हुई भूमि और अनेक नगरों में बनाई गईं जैन समाज की संस्थायें सदा कायम रहेंगी।

महाराणा जसवंत सिंह जी भी बड़े जैनधर्म के प्रेमी थे। उन्होंने विक्रम संवत् 1893 में राज आज्ञा पत्र द्वारा जैन पर्व अर्थात् दोज, पंचमी, अष्टमी, एकादशी और चतुर्दशी को तेल के कोल्हू, शराब की भट्टी आदि हिंसा के कार्य रोकने के लिये कानून बनाये गये और इन कानून को तोड़ने वालों से 250 रुपये दण्ड लिया जाता था। महाराणा उदयसिंह ने भी 1854 में जैनियों के दशलक्षण पर्व पर हिंसामय कार्यों पर रोक लगाई थी।

महाराणा कुम्भा ने मचींद दुर्ग में जिनेन्द्र भगवान की भक्ति करने के लिये अत्यंत सुन्दर जिनमंदिर बनवाया था। जैन योद्धाओं ने गुजरात और मालवा के बादशाहों के साथ बहुत वीरता के साथ युद्ध किया, जिनकी स्मृति में महाराणा कुम्भा ने ही बहुत रुपये खर्च करके 9 मंजिला जयकीर्ति स्तम्भ बनवाया।

महाराजा संग्राम सिंह ने भी भगवान ऋषभदेव की पूजन के लिये जिनमंदिर बनवाया था। इसी वंश में राजा फतहसिंह और महाराणा भोपाल सिंह ने भी जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार करके लगभग ढ़ाई लाख रुपये की राशि भेंट दी थी। इन्होंने ही जैन मुनि के उपदेश से प्रभावित होकर पशु हत्या पर पाबंदी लगाई थी।

इस तरह इतिहास पढ़ने पर मालूम होता है कि राजस्थान के इन राजाओं ने जैन धर्म की श्रीवृद्धि के लिये बहुत योगदान दिया।

साभार - सन्मति संदेश

लेखक - श्री दिगम्बर दास मुख्तार

समाचार

शिविर सम्पन्न -

पोन्नूर - आचार्य कुन्दकुन्द देव की साधना भूमि पोन्नूरमलै के आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर में आयोजित जिनदेशना आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द संपन्न हुआ। श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपारले, मुम्बई द्वारा दिनांक 21 फरवरी से 25 फरवरी 2020 तक आयोजित इस शिविर में पण्डित शैलेषभाई शाह, अहमदाबाद द्वारा नियमसार गाथा 100, पण्डित नीलेशभाई शाह, मुम्बई द्वारा लेश्या और आत्मा की 47 शक्तियाँ विषय पर, श्री विराग शास्त्री जबलपुर द्वारा आचार्य अकलंक देव विरचित परमानन्द स्तोत्र पर स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। साथ ही प्रातःकालीन व्याख्यान माला के क्रम में पण्डित श्री गुलाबचन्दजी बीना और पण्डित श्री कमलजी जैन जबेरा के व्याख्यान संपन्न हुये। प्रतिदिन प्रातः जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् रत्नत्रय विधान का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मध्य में एक दिन पहाड़ पर स्थित जिनमंदिर की सामूहिक वन्दना की गई।

सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री अनंतराय ए. सेठ के मार्गदर्शन और विराग शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

पुणे में नवीन जिनमंदिर हेतु भूमि शुद्धि संपन्न

महाराष्ट्र की प्रमुख नगरी पुणे के कोथरूड़ में नवीन जिनमंदिर हेतु 8 मार्च को भूमि शुद्धि कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से श्री विजय बड़जात्या इंदौर, श्री सुनील सर्राफ सागर, डॉ. किरण शहा पुणे उपस्थित थे। ज्ञातव्य हो कि कोथरूड़ और उसके आसपास में निवासरत लगभग 200 दिगम्बर परिवारों को जिनमंदिर न होने से जिनदर्शन का लाभ नहीं मिलता। इस समस्या को देखते हुये धर्मी श्रावक श्री सुनील गांधी पुणे ने अपना एक विशाल भूखण्ड जिनमंदिर निर्माण हेतु दान स्वरूप प्रदान किया है। यह कार्यक्रम उत्साही विद्वान पण्डित नगेशजी जैन पिड़ावा के निर्देशन और श्री विराग शास्त्री जबलपुर के संयोजन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन पण्डित अशोक लुहाड़िया मंगलायतन ने किया। इस अवसर पर पुणे के अनेक साधर्मियों ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम में सहभागिता की।

''अब नहीं'' पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण Not Any More को प्राप्त करें

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर द्वारा विराग शास्त्री द्वारा लिखित लघु धार्मिक नाटक की पुस्तक का हिन्दी भाषा में ''अब नहीं'' का प्रकाशन किया गया था। इस पुस्तक को सम्पूर्ण जैन समाज से अपार स्नेह प्राप्त हुआ और इस पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण की मांग को देखते हुये इसके अंग्रेजी संस्करण **Not Any More** का प्रकाशन भी किया गया है। हिंदी और अंग्रेजी संस्करण आप हमसे संपर्क कर प्राप्त कर सकते हैं।

"दंड" नाम के मुनि की कथा

पूर्व विदेह क्षेत्र की राजधानी वीत शोकपुर का राजा अशोक अत्यंत लोभी था। वह बैलों के पैरों से अनाज निकलवाते समय बैलों के मुंह को बंधवा दिया करता था जिससे वे अनाज न खा सकें और अपने भोजनालय में काम करने वाली महिलाओं को अपने छोटे-छोटे बच्चों को दूध पिलाने से मना करवा दिया था जिससे दूध पिलाने से महिलाओं का समय बचे और काम न रूके।

एक बार राजा अशोक के मुंह में कोई भयंकर रोग हो गया तो उसने राजवैद्यों की सलाह अनुसार उसकी दवा बनवाई और वह उस दवा को पीने ही वाला था कि उसे समाचार मिला कि नगर में एक मुनिराज आये हैं और उन्हें भी इसी प्रकार का मुंह का रोग है। उसने मुनिराज को नवधा भक्तिपूर्वक मुनिराज को आहार कराया और आहार के साथ उन्हें वह दवा भी दी जिससे मुनिराज का बारह वर्ष पुराना रोग दूर हो गया।

इस औषधि दान के फल में राजा अशोक अगले भव में अमलकपुर के राजा नंदीसेन का पुत्र हुआ। कुछ वर्ष बाद राजा नंदीसेन ने अपना राज्य अपने पुत्र को सौंपकर मुनिदीक्षा ले ली। एक बार भगवान नेमिनाथ का सवशरण आया तो राजा भी अपने परिवार सहित भगवान का धर्म उपदेश सुनने के लिये गये। भगवान की वाणी सुनकर राजा को अपनी आत्मा की अपार महिमा आई और संसार से वैराग्य हो गया और समवशरण में ही मुनिदीक्षा ले ली। मुनि दीक्षा के बाद वे विहार करने लगे परन्तु पूर्व भव में बैलों और बच्चों के भोजन में अंतराय डालने के कारण उन्हें नौ माह तक प्रतिदिन आहार के लिये जाने पर भी आहार नहीं मिला और वे सौरीपुर के पास यमुना नदी के किनारे ध्यान करने लगे।

एक दिन वहाँ का राजा शिकार खेलने वहीं समीप के जंगल में आया परन्तु दिन भर में उसे कोई शिकार नहीं मिला। वह बहुत क्रोध में लौट रहा था तो उसे यही मुनिराज ध्यान करते हुये मिले। उसने सोचा - जरूर इसी मुनि के कारण मुझे आज शिकार नहीं मिला, यह अपशकुन इसी ने किया है और राजा ने क्रोध में मुनिराज को कई बाण मारकर उनके शरीर को छलनी-छलनी कर दिया। मुनिराज के शरीर से खून की धारायें निकलने लगीं। मुनिराज ने उपसर्ग प्रारम्भ होते ही आत्मा में लीनता का पुरुषार्थ बढ़ा लिया और केवलज्ञान प्राप्तकर निर्वाणपद की प्राप्ति की।

- आचार्य अमितगति प्रणीत मरणकण्डिका ग्रन्थ से साभार

जन्म-दिवस

जन्म-मरण के अभाव की भावना भाने में ही
जन्म दिन मनाने की सार्थकता है।

जल्दी से भगवान बनो तुम,
अब अपना कल्याणक करो तुम।
जन्म मरण का नाश करो तुम,
सिद्ध शिला पर वास करो तुम।।

ध्रुव चेतन की दृष्टि से ही,संसार विलय हो जाता है।
जन्म मरण क्षय हो जाते, शाश्वत सुख वह पाता है।।

ध्रुव जैन-चेतन जैन, गांधीनगर, गुज. 20 अप्रेल

बड़े भाग्य से पाया ईर्या, जिनशासन सुन्दर अनमोल।
साहस पथ में कभी न खोना, मानो जिनवाणी के बोल।।

ईर्या विराग जैन, जबलपुर 27 अप्रेल

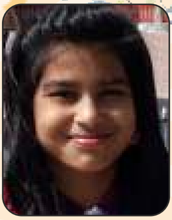

जिनधर्म मिला है आरुषी, करना मंगल काम।
जैनधर्म गौरव बढ़े, होवे ऊंचा नाम।।

आरुषी जैन, गांधी नगर, गुज. 04 मई

मानवी जग में ऐसे चमको, जग में चमके ज्यों अरविन्द।
सफल शौर्य की कविता लिखना, कार्य न होवें जग के निन्द्य।।

मानवी अरविंद जैन, जबलपुर 30 मई

चहकती चेतना के अन्तर्गत

शुल्क मात्र
500/-
एक वर्ष हेतु

यदि आप करते हैं अपने बच्चों से प्यार तो आइये
हमारे पास हम बनायेंगे जन्मदिन यादगार
भेजेंगे उपहार और शुभकामनायें अपार
तो देर किस बात की आज ही इस योजना के
आप **सदस्य बनिये** पायेंगे **तीन उपहार**

अपने जन्मदिवस के 10 दिन पूर्व आपके नाम पर लिखी
कविता के साथ एक सुन्दर मोमेन्टो, एक आकर्षक
उपहार साथ ही एक प्यारा सा ग्रीटिंग कार्ड
जिसमें होगी जन्म दिवस मनाने की सुन्दर विधि

Email : kahansandesh@gmail.com

करमन की गति न्यारी-न्यारी

हमें महाभाग्य से मनुष्य पर्याय, जैन कुल और बाहर की सुविधायें प्राप्त हैं तो भी हम हमेशा शिकायत करते हैं, अभावों का रोना रोते हैं.. जरा इन्हें देखिये और विचार कीजिये..हमें जो मिला वह हमारे पर्याप्त है या नहीं ? तो फिर भौतिक सुविधाओं की दौड़ को रोककर जैन शासन का भरपूर लाभ लीजिये वरना मनुष्य पर्याय के दुरुपयोग का फल कहीं इनकी तरह न हो..

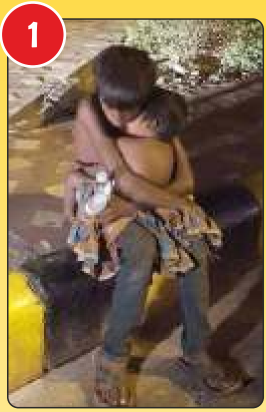

1. भाई की चिन्ता : भीषण ठंड में भी शरीर ढकने के लिये कपड़े भी नहीं।

2. ठंड मिटाने के लिये गद्दा और कम्बल चाहिये था मिली बिछाने के लिये थर्माकोल और ओढ़ने के लिये पोलिथीन

3. काश! थोड़ी तो ठंड मिटेगी...

4. नन्ही सी उम्र में काम का बोझ..

5. इंतजार एक सवारी का था और मसला दो रोटी का... मौत ने दोनों सवाल खत्म कर दिये। एक बुजुर्ग रिक्शे वाला सवारी का इंतजार करते-करते रिक्शे पर ही मर गया।

6. उम्र के इस पड़ाव पर भी सुकून नहीं.. ठंड मिटाने के लिये स्वेटर नहीं मिली तो बोरी के कपड़े बनवाकर पहन लिये।

7. माँ की ममता - एक माँ अपने बच्चों के लिये प्राण तक दांव पर लगा देती है। बिल्डिंग में आग लगने पर यह माँ अपने बेटे को बचाने के लिये स्वयं जलती रही परन्तु असहनीय पीड़ा के बाद भी अपने बच्चे को खिड़की से बाहर निकाल कर पकड़ी रही और फिर नीचे फेंक दिया। नीचे खड़े लोगों ने बच्चे को तो बचा लिया परन्तु यह माँ ने अपने को नहीं बचा पाई।

इसलिये शिकायत नहीं कीजिये। जो प्राप्त है वह पर्याप्त है।

दैनिक भास्कर

बेटी का शव मोर्चरी में रख मां ने मेले में सजाई खिलौ
दुकान, सुबह सीने से लगाने के बाद किया अंतिम संस्कार

एक कहानी ये भी...

पाप के उदय के अनेक रूप देखने को मिलते हैं। कभी-कभी दूसरों की कहानी सुनकर आंख में आंसू आ जाते हैं। ऐसी ही एक कहानी है राजस्थान के जयपुर के लालसोट में रहने वाली सुगना की। सुगना के पति को लकवा पैरालिसिस की बीमारी है और खुद सुगना को फेफड़े में छेद। पति के बीमार होने के बाद परिवार का खर्च चलाने के लिये सुगना मेले में खिलौनों की दुकान लगाती थी। 15 मार्च को भी उधार पर खिलौने खरीदकर लाई थी। 16 मार्च को सुबह दो बेटियों के साथ खिलौने लेकर पाली के मेले में पहुँच गई। सुगना की 7 वर्ष की बड़ी बेटी पिंकी सांइस पार्क में खेलते समय झूले से गिर गई और उसकी मृत्यु हो गई। बेटी की मौत का समाचार सुनकर सुगना को झटका लगा। स्थिति इतनी खराब थी कि वह यदि खिलौने नहीं बेचती तो कर्ज कैसे चुकाती और परिवार का खर्च कैसे चलता ? इतनी बड़ी घटना के बाद भी सुगना ने बेटी के शव को मोर्चरी में रखवाया और दिन भर कांपते हाथों और आंखों में आंसू लिये रात को 12 बजे तक खिलौने बेचती रही। सुबह बेटी के शव के दाह संस्कार के बाद अपने मन में बेटी के वियोग की अपार पीड़ा लिये फिर से मेले में खिलौने बेचने के लिये बैठ गई।

न जाने किस विराधना का फल ये मिला। सावधान! प्राप्त संयोगों का सदुपयोग कीजिये।

नजरिया
चित्रकथा ● खलील खान
चिड़िया घर में रहने वाले २ बंदर आपस में बातें कर रहे थे.
जब से हम यहां आए हैं, तब से कितना फायदा हो रहा है
कैसा फायदा?
अरे भाई, पिंजरे में बैठ कर हमें दुनिया भर के अलगअलग लोग जो देखने को मिलते हैं.
हर हाल में खुश रहो

बोलते चित्र

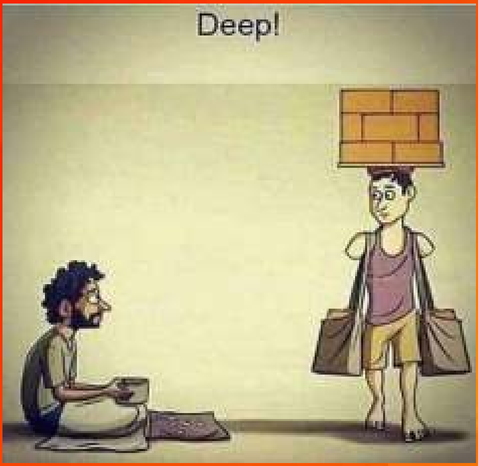
Deep!

Respect your Parents
WHAT PARENTS DO
WHAT THEY GET
SCHOOL
OLD AGE HOME
They didn't Leave you when you were Kid
Don't Leave them when they're Old
Please don't leave them
They need You

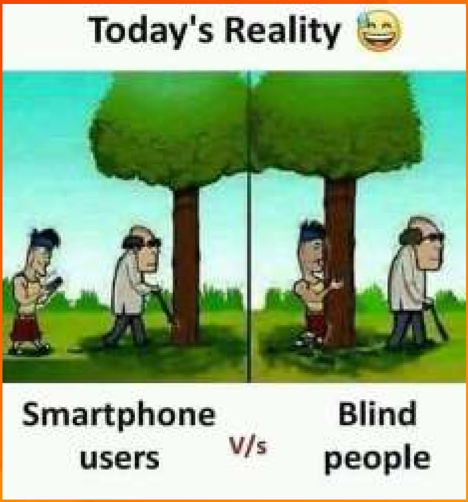
Today's Reality
Smartphone users
V/s
Blind people

UNSUCCESSFUL PEOPLE
FAIL
FAIL
FAIL
FAIL
FAIL
SUCCESSFUL PEOPLE
FAIL
FAIL
FAIL
FAIL
FAIL
FAIL
FAIL

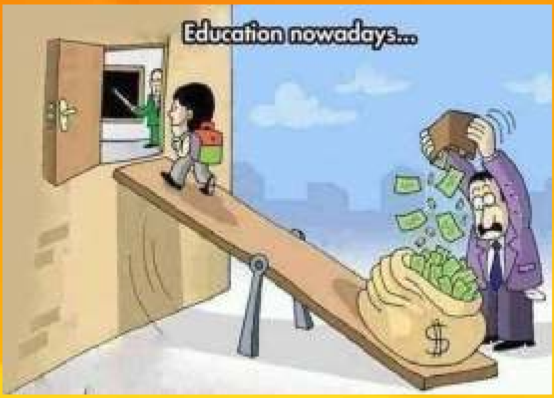
Education nowadays...
$

Be thankful for what you have.